Shimla Eco-Vibes; Vol. 1, No. 1, October 2024, pp 53-55

हाटूपर्वत - प्रकृति के सान्निध्य में एक सुन्दर सैरगाह

-Dharampal Bhardwaj, Expert in Water Management, worked in Central Power Commission, Bhopal

नारकंडा, हिमाचल प्रदेश के शिमला जिला में 9,000 फुट की उंचाई पर बसा एक पहाड़ी नगर है। राष्ट्रीय उच्च मार्ग - 5 पर बसा यह नगर सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र है। बर्फ के मौसम में यहां देवदार के वृक्षों से घिरी 'धोमड़ी' की ढलान पर 'स्कीइंग' का आनन्द ले सकते हैं और गर्मी के मौसम में यहां हाटू पर्वत पर जाने का आकर्षण बना रहता है। ऐसे कम लोग ही होंगे जो शिमला आयें और नारकंडा न जायें। मात्र 60 कि.मी. ही है शिमला से नारकंडा। खूबसूरत चौड़ी सड़क। घाटी और पहाड़, दोनों तरफ देवदार और कैल के पेड़। हल्का सा चढाव लिये सड़क 7,000 फुट के आसपास बसे राजधानी शहर शिमला से यहां तक पहुंचा देती है।

अब हाटू पर्वत के शिखर तक लोग वाहन से जाना ही सुभीता समझते हैं। नारकंड़ा-थानाधार रोड पर एक कि.मी. जाकर शिलीकांदरी से ऊपर की ओर एक मार्ग जाता है हाटू को। यह एकल संकरा मार्ग 6 कि.मी. लम्बी 'हेयर पिन ड्राईव' है, जो यहां से अढ़ाई हज़ार फुट ऊपर चढ़ा देती है। हाटू पर्वत 11,152 फुट की ऊंचाई पर है। यह 6 कि.मी. की ड्राईव बेहद रोमांचक है। संकरे मोड़ ही मोड़। सामने कोई गाड़ी आ जाये तो मुश्किल पड़ जाती है। किनारे कर पास देनी की जगह भी कहीं-कहीं होती है। बर्फ के सीज़न में यह रास्ता बन्द रहता है। हाटू पर्वत के शिखर पर हाटू माता का प्रसिद्ध मंदिर है।

पहाड़ों में लगभग 4,000 फुट पर चीड़ के पेड़ों के जंगल शुरू हो जाते हैं। उसके कुछ और ऊंचाई पर कैल के पेड़ों के साथ देवदार और कुछ और ऊपर देवदार के घने जंगल शुरू हो जाते हैं। नारकंडा से थानाधार रोड के आसपास 9,000 फुट की ऊंचाई पर देवदार के साथ रई के मोटे और लम्बे पेड़ लगे हैं।

अगर आप नें ढीली टोपी पहन रखी हैं और आप इन पेड़ों के शिखर को देखने के लिए सिर उठाते हैं तो आप की टोपी गिर सकती है। हाटू की चढ़ाई चढ़ते हुए इन वृक्षों के नयनाभिराम दृष्य आप को दिखते जायेंगे। लेकिन यह क्या जब आप इस मार्ग के आखिरी मोड़ के करीब पहुंच जाते हैं तो पूरा परिदृश्य ही बदला हुआ दिखता है। यहां से शुरू हो जाते हैं 'मौरू' के पेड़। यह पेड़ बान (Oak) की तरह दिखते ज़रूर हैं, पर देवदारों की तरह ऊंचे होते है। हाटू की इस ऊंचाई पर 'मौरू' के घने पेड़ हैं। 'मौरू' इन पेड़ों का पहाड़ी भाषा में नाम है। इन के पत्ते बान के पत्तों से नर्म और कम कंटीलेदार होते हैं। भेड़ बकरीयां इन्हें बड़ा स्वाद लेकर खाती हैं। इस ऊंचाई पर कुछ और तरह की वनस्पति और जड़ी बूटियां भी मिलती हैं।

नारकंड़ा-थानाधार रोड पर 5 कि.मी. जाकर एक सड़क ऊपर की ओर बाघी की तरफ जाती है। देवदार और रई के पेड़ों का सम्मोहन इस रोड पर और भी बढ़ जाता है। इस रोड पर एक कि.मी. जाकर आता है सिद्धपुर। यहां से हाटू पर्वत चढ़ने का एक अत्यन्त रमणीय पैदल रास्ता है। बीच-बीच में छोटे-छोटे पोखर। सुबह के समय पूर्व दिशा से निकली सूर्य की किरणें देवदारों को बेध कर निकलती दिखती रहती हैं। गर्मियों में कुछ सैलानी यहां 'ट्रैकिंग' करते भी दिख जाते हैं। हाटू की यह ढलानें इतनी खूबसूरत हैं कि यदि इन्हें संवारा जाये तो स्विट्जरलैंड की ढलानों से टक्कर ले सकती हैं।

एक दृश्य है। नवरात्र का दिन है। इस पैदल मार्ग से माता के दर्शनार्थ, पीठ पर छोटे बच्चो को शॉल में बांधकर, हाथ में माता की ध्वजा लिये हाटू मन्दिर तक की चढ़ाई पैदल

जौ उगे तो वर्षा भी हुई और अनाज भी अच्छा हुआ। तब से इस जगह का नाम पड़ा जौ-बाग। लेकिन यहां दिखते गूज़र ही हैं। भेड़ बकरियां गाय भैंस घोड़े चराते। गुलमर्ग की तरह यह भी एक सुन्दर स्थल बन सकता है। हाटू मन्दिर से इस स्थल तक मार्ग पक्का करने की ज़रूरत है। वाहन के रास्ते भी बहुत से पर्यटक हाटू मन्दिर तक पैदल जाते हैं। हर मोड़ पर बदलते दृष्य! घने वन से छनकर आती हवा! मध्य मार्ग पर पानी की बावली! कहते हैं इसके पानी में औषधीय गुण हैं। जितना भी चलो, इस ऊंचाई पर पसीना कम ही आता है। यदि आप परिवार या फिर मित्रों के साथ हैं तो पता ही नहीं चलता कि कब रास्ता कट गया। ट्रैकिंग का अपना ही आनन्द है। कुछ वर्ष यहां रह लिये तो आदमी की उम्र दस साल तो बढ़ ही जाती है।

हाटू पर्वत भौगोलिक तौर पर एक जल विभाजक रेखा भी है। इसकी पूर्व की ओर की ढलान वर्षा जल को कोटगढ़ उप तहसील और ननखड़ी तहसील के क्षेत्र से होकर सतलुज में बहा ले जाती है जबकि पश्चिम की ओर की ढलान का बहाव कोटखाई तहसील के क्षेत्र से यमुना की ओर है।

हाटू मन्दिर से जुड़ी जनश्रुति एवं आख्यान

हाटू के शिखर पर हाटू माता का मन्दिर है। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार इसे मंदोदरी मन्दिर भी कहते है। कहते हैं कि रामायण काल में दशानन की पत्नी मंदोदरी नें यहां देवी मां का मन्दिर बनाया था। वह देवी की भक्त थी और यहां पूजा करने आती थी। उस काल में अधिकतर देवी की स्थापना शिला रूप में की जाती है। एक स्थानीय बुज़ुर्ग पण्डित जी नें मुझे एक बार बताया भी था कि बचपन में जब वे यहां आते थे तो उस समय यहां इस तरह का मन्दिर नहीं था। इस जगह कुछ शिलायें थी। लोग उन्हीं का पूजन करते थे। जनश्रुति के अनुसार मंदोदरी नें यहां जेठ माह के पहले रविवार को मां दुर्गा की स्थापना की थी। इस कारण यहां हर वर्ष जेठ के पहले रविवार को मेला लगता आया है। यह मेला कब से लगता आया है, यह ज्ञात नहीं है। वाहनों से आने जाने की वजह से इस मेले में लोगों की आवाजाही बहुत बढ़ गई है। इस कारण पिछले कुछ वर्षों से यह मेला जेठ माह के हर रविवार को लग रहा है। आप सोच सकते हैं कि कहां भारत के सुदूर दक्षिण में लंका और कहां हिमाचल में नारकंडा! ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार मंदोदरी मंडोर, जोधपुर, राजस्थान की थी। जोधपुर यहां से इतना भी दूर नहीं है। कई पर्यटक राजस्थान से अपने वाहन से घूमने यहां तक आते रहते हैं। फिर रावण के पास तो पुष्पक विमान था। कथाओं के अनुसार कैलाश पर्वत पर उनका आना जाना था। हवाई मार्ग हो सकता है यहीं से रहा हो। पहाड़ों में हिमानियों पर भगवान शिव का वास माना जाता है और शिखरों पर देवी का वास। देवी के मंदिर शिखरों पर ही बने है। इस क्षेत्र के सबसे ऊंचे और रमणीक शिखर पर देवी की स्थापना तो की ही गई होगी । श्री सुरेश शर्मा नें अपनी पुस्तक "Four Eras of The Battling Gods & Mortals" में लिखा है कि मन्दोदरी मय दानव की पुत्री थी जो असुरों के महान वास्तुकार एवं शिल्पी थे। मय दानव नगर निर्माण के अप्रतिम वास्तुकार के अलावा हवाई जहाज बनाने के भी कुशल इंजीनियर थे। उनके बनाये हवाई जहाज हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ज़मीन पर उतर सकते थे और उड़ सकते थे। उनको उड़ान भरने के लिए रन-वे की ज़रूरत नहीं थी। इस तर्क के अनुसार मंदोदरी के पास स्वयं के भी हवाई यात्रा के साधन रहे होंगे।

दूसरा आख्यान महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। उस अनुसार पाण्डव बनवास के दौरान कुछ समय हाटू पर्वत पर भी रहे हैं। यहां तीन चट्टानें इस तरह खड़ी हैं कि चूल्हे के आकार की दिखती हैं। इसे भीम चूल्हा कहते हैं। कहते हैं भीम इस प्राकृतिक चूल्हे पर खाना बनाया करते हैं। हिमाचल का यह पूरा क्षेत्र पाण्डवों से जुड़ा है। पाण्डव हस्तिनापुर से आये थे। हस्तिनापुर आज के मेरठ शहर का बाहरी हिस्सा है। यहां से ज्यादा दूर नहीं है। श्री सुरेश शर्मा के खोजपूर्ण विश्लेषण के अनुसार रामायण और महाभारत काल में मात्र 35 वर्षों का अन्तर है। यह घटनायें लगभग 4,000 वर्ष पूर्व की हैं। इन दोनों कालों के अवशेष आज भी विद्यमान हैं।

इस लेख में इन आख्यानों का उल्लेख इसलिए भी किया गया है कि हाटू केवल प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए ही आकर्षण का केन्द्र नहीं है बल्कि हमारी प्राचीन धरोहर भी है। यहां पहुंच कर लगता है कि हम दुनिया से बहुत ऊपर आ गये हैं। यहां से दूर-दूर तक बहुत जगाहें दिखती हैं। गहरी घाटियां, बर्फीले पहाड़, तराई में बसे गांव, खेत बागान, बहुत वर्ष पहले मैंनें हाटू महिमा पर एक स्तुति लिखी थी। इसमें एक पद है -

तेरे मन्दिर से हे हाटू माता !
धौला, पीर पंजाल दिखे हैं
अर्ध चन्द्र सा श्वेत हिमाला
शिव जटा की शोभा बने हैं।
तेरी भूमि पर पांव धरे हैं
मईया हमारे भाग बड़े हैं।।
—-

देव भूमि में सावन कैसा

खिसके भूमि डालें टूटें
लील रही भू घर जन बूटे
देव देवियां मौन देखतीं
कौन गूर है जिसको पूछे।

कैसे पींग भरे तरुणाई
दिखे कहीं उल्लास न वैसा
उफन रही हैं खड्डें देखो
देव भूमि में सावन कैसा!

हरे भरे वन शीतल वायु
खुशियां देते बढ़ाते आयु
जल की भीषण झलक ये कैसी
काट रहा जड़ फुफके वायु।

बुज़ुर्ग सयाने कहते दिखते
देखा कभी न मंज़र ऐसा
घर में सहमे सहमे से हैं
देव भूमि में सावन कैसा!

टीवी खबरें और बहकाती
जोखिम में हम हमें बताती
मां बच्चों को कहती सो जा
बादल आया देख डराती।

सुबह सवेरे खेत देखते
बहा तो कुछ न घर है वैसा?
डंगों की महफूज़ी जांचें
देव भूमि में सावन कैसा!

-धर्म पाल भारद्वाज